811

Total Pages : 4 Roll No. .....

DVK-103

स्त्रोतपाठ एवं होम विधि

वैदिक कर्मकाण्ड में डिप्लोमा (DVK-17)

Examination, 2021 (Winter)

Time : 2 Hours] **Max. Marks : 100**

नोट : यह प्रश्नपत्र सौ (100) अंकों का है जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

(खण्ड-क)

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×26=52)

1. अधोलिखित मन्त्रों से किन्हीं तीन मन्त्रों का अर्थ सहित वर्णन कीजिए।

(i) हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

(ii) चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।

(iii) आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

(iv) मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

(v) यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्। श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।

2. अनुष्ठानात्मक पद्धति से पुरुष सूक्त का वर्णन कीजिए।

3. चैत्रादि द्वादश मासों में सूर्य के प्रवेश का वर्णन कीजिए।

4. अन्नपूर्णा स्तोत्र का परिचय लिखिए।

5. टिप्पणी लिखिए-

(i) स्रुवा संस्कार विधि

(ii) हवन में आहुति विचार

(iii) दक्षिणा विचार

(खण्ड-ख)

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बारह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×12=48)

1. दुर्गा सप्तशती के अनुष्ठान विधि का परिचय दीजिए।

2. शतचण्डी याग का विस्तार से वर्णन कीजिए।

3. पूर्णाहुति का महत्त्व क्या है लिखिए।

4. अग्निवास का विचार कीजिए।

5. दुर्गा क्षमापन स्तोत्र से किन्हीं चार श्लोकों का अर्थभाव प्रस्तुत कीजिए।

6. याग विधि का विस्तार से वर्णन कीजिए।

7. अग्नि स्थापना विधि का वर्णन कीजिए।

8. टिप्पणी लिखिए–

(i) शतचण्डी पाठ परिचय

(ii) सहस्रचण्डी याग विधि

(iii) पंच भू संस्कार

(iv) कुण्ड निर्माण विधान